प्रेम और सौन्दर्य

कवि परिचय – हिन्दी की रीतिकालीन रीतिसिद्ध भावधारा के कवि बिहारी का जन्म सन् 1595 ई. (सम्वत् 1652) में ग्वालियर में हुआ था। आपके जन्म के सात–आठ वर्षों बाद आपके पिता केशवराय ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले गए। ओरछा में ही आपने सुप्रसिद्ध कवि केशवदास से काव्य शिक्षा ग्रहण की और वहीं पर काव्यग्रन्थों, संस्कृत और प्राकृत आदि का अध्ययन किया। उर्दू–फारसी के अध्ययन के लिए आप आगरा आए, यहीं आपकी भेंट प्रसिद्ध कवि अब्दुल रहीम खानखाना से हुई। आपकी काव्य प्रतिभा ने जयपुर नरेश महाराज जयसिंह तथा उनकी पटरानी अनन्त कुमारी जी को विशेष प्रभावित किया। आप जयपुर नरेश के राजकवि रहे।

आप सन् 1663 ई. (सम्वत् 1720) के आस–पास परलोक वासी हुए। आपकी एक मात्र रचना 'सतसैया' (सतसई) मिलती है जिसमें दोहे और सोरठे संग्रहीत हैं।

हिन्दी में समास–पद्धति की शक्ति का परिचय सबसे अधिक बिहारी ने दिया है। आपकी रचना में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और ज्योतिष की असाधारण बातें भी अप्रस्तुत रूप में आई हैं। आपकी विषय सामग्री का प्रधान अंग शृंगार है। प्रेम के संयोग पक्ष में नख–शिख वर्णन के साथ ऋतुवर्णन भी आपने किया है। निम्वार्क सम्प्रदाय में दीक्षित होने के कारण भक्ति विषयक उद्‌गार भी आपकी रचना में देखे जा सकते हैं। आपके दोहों में अनुप्रास, यमक, आदि कई अलंकार भरे पड़े हैं।

बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रज है। भाषा में पूर्वी प्रयोग के साथ बुंदेली का भी प्रभाव है। आपकी भाषा प्रौढ़ और प्रांजल है। वह मुहावरों के प्रयोग सांकेतिक शब्दावली और सुष्ठु पदावली से युक्त व्याकरण सम्मत है।

कवि परिचय – हिंदी के छायावाद युग के प्रवर्तकों में प्रमुख जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी (उ.प्र.) के प्रतिष्ठित 'सुंघनी साहू' नामक समृद्ध एवं विख्यात परिवार में सन् 1889 ई. (माघ शुक्ल दशमी सं. 1946 वि.) को देवी प्रसाद साहू के घर हुआ था। घर पर ही आपकी शिक्षा के लिए हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फारसी के शिक्षक नियुक्त किए गए, आप 48 वर्ष की आयु में यक्ष्मा रोग से 15 नवम्बर सन् 1937 को दिवंगत हुए।

प्रसाद जी की काव्य यात्रा सन् 1909 से इंदु पत्रिका में प्रकाशित उनकी ब्रजभाषा और खड़ी बोली हिंदी की कविताओं से प्रारंभ हुई। 'चित्राधार' और 'कानन कुसुम' आपके प्रारंभिक स्वतंत्र काव्य संग्रह हैं। आपकी भावनामूलक आदर्श प्रेमाभिव्यंजना 'प्रेमपथिक' और 'करुणालय' गीत नाट्य में दृष्टव्य हैं। 'झरना', 'आँसू' और 'लहर' काव्य कृतियों के प्रेमानुभूति के श्रेष्ठ गीतों ने हिंदी को समृद्ध किया। 'कामायनी' महाकाव्य सृष्टि की आदि कथा के रूप में मानवता की रूपक कथा है।

प्रसाद जी ने लगभग बारह नाटक भी लिखे, जिनमें प्रमुख 'स्कंदगुप्त' 'चंद्रगुप्त' और 'ध्रुव स्वामिनी' हैं। वे एक युगप्रवर्तक कलाकार भी थे। उनके 'छाया', 'प्रतिध्वनि' 'आकाशदीप', 'आंधी' 'इंद्रजाल' कहानी संग्रह और 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण) यथार्थवादी उपन्यास हैं।

केन्द्रीय भाव

प्रेम मानवीय जीवन का आधार है। मनुष्य के सामाजिक विस्तार में प्रेम की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रेम ही व्यष्टि को समष्टि से जोड़ता है। इस रूप में प्रेम वह आंतरिक भाव है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपना विस्तार करके सृष्टि चेतना के साथ संवेदित होता है। प्रेम व्यक्ति का विस्तार है, प्रेम जीवन की शांति है, प्रेम मानवीय आचरण का प्रस्थान भाव है।

प्रेम की अनुभूतियाँ संबंधों की चेतना जाग्रत करती हैं। प्रेम के जो अनेक रूप हैं उनमें नारी पुरुष के पारस्परिक संबंधों का भी एक महत्वपूर्ण रूप है। इसे काव्य के क्षेत्र में शृंगार की संज्ञा दी गई है।

शृंगार के अंतर्गत रूप, चेष्टा, शील, भाव को सौन्दर्य का केन्द्र माना गया है।

प्रेम का प्रारंभ सौन्दर्य के सिंहद्वार से ही होता है। सौन्दर्य मात्र रूप-छटा में ही निहित नहीं रहता है, अपितु आचरण में भी निवास करता है और आचरण का सौन्दर्य ही सच्चा सौन्दर्य है। इसे ही शील सौंदर्य कहा गया है। शृंगार के अंतर्गत वियोग और मिलन की भाव दशाओं का वर्णन किया जाता है। यह माना गया है कि वियोग में प्रेम की सघनता बढ़ती है। संपूर्ण हिंदी काव्य प्रेम की अनुभूतियों से परिपूर्ण है।

रीतिकाल के कवियों ने प्रेम के अनेक पहलुओं का चित्रण किया है किन्तु इस काल में सौन्दर्य वर्णन की प्रधानता है। बिहारी, घनानंद, मतिराम आदि कवियों ने प्रेम और सौंदर्य का प्रभावशाली वर्णन किया है। सौन्दर्य वर्णन में बिहारी अन्यतम कवि हैं। वे नायिका के सौंदर्य वर्णन में सिद्धहस्त कवि माने जाते हैं। रूप-चेष्टा और शील सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन उनके काव्य में प्राप्त होता है। प्रस्तुत दोहों में बिहारी द्वारा कृष्ण – राधिका के आकर्षक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। पीतांबर ओढ़े कृष्ण का नीलवर्णी रूप और झीने वस्त्र धारण किए राधिका का गौरवर्णी स्वरूप सुंदर उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से प्रकट किया गया है। सौंदर्य दर्शन की न मिटने वाली प्यास के अतिरिक्त प्रेम की अगाध अनुभूति की चर्चा भी इन दोहों में मिलती है।

आधुनिक युग के छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद भी प्रेम और सौंदर्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। प्रसाद का सौंदर्य वर्णन अनुभूतिपरक है। प्रस्तुत काव्यांश उनकी यशस्वी कृति 'कामायनी' से उद्‌धृत है। इसमें वे श्रद्धा के सौंदर्य को विभिन्न उपमाओं के माध्यम से व्यक्त करते हैं। प्रलयकाल के बाद मनु जब अकेले रह जाते हैं तब उन्हें श्रद्धा के दर्शन होते हैं। श्रद्धा की रूप-राशि से वे आकर्षित हो उठते हैं श्रद्धा की शरीर कांति, उसकी आकर्षक वेशभूषा एवं उसकी उदारता का वर्णन उदात्त परिवेश में किया गया है। अनेक नवीन और मौलिक उपमाओं के माध्यम से श्रद्धा के रूप का आकर्षक वर्णन प्रस्तुत करते हुए प्रसाद जिस तरह की शब्दावली का प्रयोग करते हैं वह दीप्ति और प्रकाश की ओर संकेत करने वाली है। इस रूप में प्रसाद द्वारा वर्णित सौन्दर्य प्रकाश चेतना से उद्‌भूत है।

सौंदर्य बोध

सोहत औढ़ैं पीतु पट्ु, स्याम सलोनैं गात ।
मनौं नीलमनि – सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात ॥ 1 ॥

सखि सोहत गोपाल कै, उर गुंजनु की माल ।
बाहिर लसत मनौ पिये, दावानल की ज्वाल ॥ 2 ॥

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि–गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥ 3 ॥

मकराकृति गोपाल कैं, सोहत कुंडल कान ।
धस्यौ मनौ' हिय गढ़ समरु ड्योढ़ी लसत निसान ॥ 4 ॥

नीको लसत लिलार पर, टीको जरित जराय ।
छबिहिं बढ़ावत रवि मनौ, ससि मंडल में आय ॥ 5 ॥

झीनैं पट मैं झिलमिली, झलकति ओप अपार ।
सुर तरु की मनु सिंधु में, लसति सपल्लव डार ॥ 6 ॥

त्यौं–त्यौं प्यासेई रहत, ज्यौं–ज्यौं पियत अघाय।
सगुन सलोने रूप की, जु न चख–तृषा बुझाय ॥ 7 ॥

तो पर वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान ।
तू मोहन कै उर बसी, है उरबसी समान ॥ 8 ॥

फिरि–फिरि चित उत हीं रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग–अंग–छवि–झौर में, भयो भौंर की नाव ॥ 9 ॥

जहाँ–जहाँ ठाढ़ौ लख्यौ, स्याम सुभग – सिरमौरु ।
उनहूँ बिन छिन गहि रहतु, दृगनु अजौं वह ठौरु ॥ 10 ॥

– बिहारी

श्रद्धा

''कौन तुम ? संसृति – जलनिधि तीर–तरंगों से फेंकी मणि एक,
कर रहे निर्जन का चुपचाप प्रभा की धारा से अभिषेक ?
मधुर विश्रांत और एकांत – जगत का सुलझा हुआ रहस्य,
एक करुणामय सुंदर मौन और चंचल मन का आलस्य ।''
सुना यह मनु ने मधु गुंजार मधुकरी का–सा जब सानन्द,
किए मुख नीचा कमल समान प्रथम कवि का ज्यों सुंदर छंद,
एक झिटका–सा लगा सहर्ष, निरखने लगे लुटे–से कौन,
गा रहा यह सुंदर संगीत ? कुतूहल रह न सका फिर मौन।
और देखा वह सुंदर दृश्य नयन का इंद्रजाल अभिराम,
कुसुम–वैभव में लता समान चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम।
हृदय की अनुकृति बाह्य उदार एक लंबी काया उन्मुक्त,
मधु–पवन–क्रीड़ित ज्यों शिशु साल, सुशोभित हो सौरभ – संयुक्त,

मसृण, गांधार देश के नील रोम वाले मेषों के चर्म,
ढँक रहे थे उसका वपु कांत बन रहा था वह कोमल वर्म।
नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग।
आह, वह मुख! पश्चिम के व्योम बीच जब घिरतें हो घनश्याम,
अरुण रवि- मंडल उनको भेद दिखाई देता हो छविधाम।
या कि, नव इंद्रनील लघु शृंग फोड़ कर धधक रही हो कांत,
एक लघु ज्वालामुखी अचेत माधवी रजनी में अश्रांत
घिर रहे थे घुँघराले बाल अंस अवलंबित मुख के पास,
नील घनशावक-से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास।
और उस मुख पर वह मुसकान! रक्त किसलय पर ले विश्राम -
अरुण की एक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम।
नित्य-यौवन छवि से ही दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्ति,
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति।
उषा की पहिली लेखा कांत, माधुरी से भींगी भर मोद,
मद भरी जैसे उठे सलज्ज भोर की तारक-द्युति की गोद।
कुसुम कानन अंचल में मंद-पवन प्रेरित सौरभ साकार,
रचित-परमाणु-पराग-शरीर, खड़ा हो, ले मधु का आधार।
और, पड़ती हो उस पर शुभ्र नवल मधु-राका मन की साध,
हँसी का मदविह्वल प्रतिबिंब मधुरिमा खेला सदृश अवाध।

- जयशंकर प्रसाद

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. श्रीकृष्ण के हृदय में किसकी माला शोभा पा रही है ?
2. गोपाल की आकृति कैसी है ?
3. श्रद्धा का गायन-स्वर किस तरह का है ?
4. 'मधुर विश्रांत और एकांत जगत का सुलझा हुआ रहस्य' यह संबोधन किसके लिए है ?
5. माथे पर लगे टीके की तुलना किससे की गई है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. गोपाल के गले में पड़ी गुंजों की माला की तुलना किससे की गई है ?
2. श्रीकृष्ण के ललाट पर टीका की समानता किससे की गई है ?
3. मनु को हर्ष मिश्रित झटका सा क्यों लगा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।
2. 'सुरतरु की मनु सिंधु में, लसति सपल्लव डार' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. 'अरुण रवि मंडल उनको भेद दिखाई देता हो छवि धाम' का भावार्थ लिखिए ।
4. अधोलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (अ) 'तो पर वारौं उरबसी .... ह्वै उरबसी समान।'
   (ब) 'हृदय की अनुकृति' .... सौरभ संयुक्त

काव्य सौन्दर्य -

(1) अधोलिखित काव्यांश में अलंकार पहचान कर लिखिए –
   (अ) 'धस्यो मनौ हियगढ़ समरु ड्योढ़ी लसत निसान।'
   (ब) 'विश्व की करुण कामना मूर्ति'

(2) ''फिर-फिर चित उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग छवि झौंर मैं, भयो और की नाव ॥'' में छंद पहचान कर उसके लक्षण लिखिए।

ध्यान दीजिए -

श्रृंगार रस – नायक, नायिका के सौंदर्य तथा प्रेम संबंधी परिपक्व अवस्था को श्रृंगार रस कहते हैं। श्रृंगार के दो भेद होते हैं। संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार।

संयोग श्रृंगार –

''एक पल मेरे प्रिया के दृग पलक
थे उठे ऊपर सहज नीचे गिरे
चपलता ने इस विकंपित पुलक से
दृढ़ किया मानो प्रणय संबंध था।''

स्थायी भाव – रति
आलंबन – प्रिया (प्रेमिका)
उद्दीपन – द्दग पलक
अनुभाव – विकंपित, नेत्रों के पलकों का ऊपर उढ़ना एवं आना गिरना
संयोग भाव – हृदय में हलचल, चपलता
संचारी श्रृंगार – जहाँ नायक और नायिका का संयोगावस्था का वर्णन होता है। वहाँ संयोग श्रृंगार होता है।

प्रश्न – संयोग श्रृंगार का एक उदाहरण रस के विभिन्न अंगों सहित लिखिए ।

वियोग श्रृंगार –

''उनका यह कुंज-कुटीर वहीं झड़ता उड़ अंशु-अबीर जहाँ
अलि, कोकिल, कीर, शिखी सब हैं सुन चातक की रट पीव कहाँ?
अब भी सब साज-समाज वही तब भी सब आज अनाथ यहाँ
सखि'' जा पहुँचे सुध-संग कहीं यह अंध सुंगध समीर वहाँ''

उपर्युक्त उदाहरण में विरहिणी यशोधरा की विरह दशा का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में

स्थायी भाव – रति

आश्रय – यशोधरा

आलम्बन – सिद्धार्थ

उद्दीपन – कुंज-कुटीर, कोकिल, भौरों और पपीहे की ध्वनियाँ

अनुभाव – सखी से विषाद भरे स्वर में कथन

संचारीभाव – स्मृति, मोह, विषाद

वियोग शृंगार – जिस रचना में नायक और नायिका का विरह वर्णन हो वहाँ वियोग शृंगार होता है।

प्रश्न – वियोग शृंगार को परिभाषित करते हुए उदाहरण देकर रस के अंगो सहित लिखिए ।

योग्यता विस्तार

1. नीति संबंधी दोहों का संकलन कर चार्ट बनाएँ एवं उन्हें कक्षा में टाँगिए।
2. मात्रिक छंदों के उदाहरण छाँटकर एक हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।
3. दोहा – चौपाई पर आधारित अंत्याक्षरी का आयोजन कीजिए।
4. आपके आस-पास अनेक मूक पशु-पक्षी रहते हैं, आप उनके प्रति अपने प्रेम का भाव कैसे प्रकट करते हैं।

शब्दार्थ

सोहत = शोभायमान। **सलोने** = सुंदर। **आतप** = धूप। **दावानल** = जंगल की आग। **मकराकृति** = मगर के आकार की। **निसान** = ध्वज। **समरु** = कामदेव। **भौंर** = भँवर। **चख** = आँखे। **उर बसी** = हृदय पर पहनी जाने वाली माला। **उरबसी** = हृदय में बसी हुई। **उरबसी** =उर्वशी अप्सरा। **ओप** = कांति, आभा। **सुरतरु** = कल्पवृक्ष। **लसति** = सुशोभित है। **सपल्लव** = पत्रों सहित। **दृगनु** = आँखों में।

संसृति = संसार। **जलनिधि** = समुद्र। **तरंग** = लहर। **निर्जन** =जन रहित, सुनसान। **प्रभा**=प्रकाश। **मधुगुंजार** = मीठी आवाज। **मधुकरी** = भौंरी। **सहर्ष** = प्रसन्नता सहित। **निरखने** = देखने। **कुतूहल** = जिज्ञासा। **इंद्रजाल** = जादू। **अभिराम** = सुंदर। **अनुकृति** = प्रतिबिंव। **उन्मुक्त** = स्वतंत्र। **शिशुसाल** = साल वृक्ष का पौधा। **सौरभ- संयुक्त** = सुगंध से भरा हुआ। **वपुकांत** = सुंदर देह। **वर्म** = कवच। **लघुशृंग** = छोटी पहाड़ी। **अश्रांत** = बिना थके। **अंस** = कंधा। **अवलंबित** = सहारे, टिके हुए। **घनशावक** = बादल का टुकड़ा। **विधु** = चंद्रमा। **रक्त किसलय** = लाल रंग के नए पत्ते (ओंठ) । **अम्लान** = बिना मलीन हुए ताजी। **अरुण** = सूर्य। **स्फूर्ति** = चेतना। **लेखा** = किरण। **भोर की तारक द्युति** = सुबह के तारों की चमक। **कानन** = जंगल। **मधुराका** = पूर्णिमा की रात। **खेला** = लहर।